eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

राष्ट्र की अवधारणाः भारत के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Received: 21 November 2023 Accepted and Reviewed: 25 November 2023, Published : 01 Dec 2023

Abstract

राष्ट्र की अवधारणा एक व्यापक विषय है, जो समाज, संस्कृति, राजनीति और इतिहास के विभिन्न पहलुओं को समाहित करता है। भारत, जो विविधताओं से परिपूर्ण देश है, उसकी राष्ट्रीय अवधारणा विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है। यह शोध पत्र राष्ट्र की अवधारणा को भारत के विशेष संदर्भ में समझने का प्रयास करता है। इसमें भारतीय राष्ट्रवाद, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना, संविधानिक परिप्रेक्ष्य, वैश्वीकरण और समकालीन संदर्भ में राष्ट्र की भूमिका पर विस्तृत चर्चा की गई है।

कीवर्ड– राष्ट्र, भारत, राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक विविधता, संविधान, वैश्वीकरण, सामाजिक संरचना, राजनीतिक परिप्रेक्ष्य।

Introduction

राष्ट्र की अवधारणा एक व्यापक और बहुआयामी विषय है, जो विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक पहलुओं से जुड़ी हुई है। यह न केवल एक भौगोलिक इकाई है, बल्कि इसमें साझा इतिहास, सांस्कृतिक मूल्य, परंपराएँ, भाषा और सामूहिक पहचान जैसे तत्व शामिल होते हैं। भारत, जो कि बहुलतावाद, विविधता और समावेशिता का प्रतीक है, राष्ट्र की अवधारणा को एक अनूठे संदर्भ में प्रस्तुत करता है। भारतीय राष्ट्रवाद का स्वरूप समय के साथ विकसित हुआ है, जो प्राचीन सभ्यताओं से लेकर आधुनिक राष्ट्र–राज्य तक की यात्रा को दर्शाता है।

वैदिक काल, महाजनपद युग, मुगल साम्राज्य, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और स्वतंत्रता संग्राम – इन सभी ने भारत में राष्ट्र की अवधारणा को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह शोध पत्र भारतीय संदर्भ में राष्ट्र की अवधारणा का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें राष्ट्र और राज्य के बीच के अंतर, भारतीय राष्ट्रवाद के विविध स्वरूपों, संवैधानिक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक संरचना, वैश्वीकरण और समकालीन चुनौतियों की विस्तृत समीक्षा की जाएगी।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जब राष्ट्रीय पहचान और वैश्विक नागरिकता के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता है, तब भारत की राष्ट्र अवधारणा एक महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र बन जाती है। यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालेगा कि किस प्रकार भारतीय राष्ट्रवाद ने विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों के बीच स्वयं को ढाला है और भविष्य में इसकी दिशा क्या हो सकती है।

राष्ट्र की परिभाषा और अवधारणा– राष्ट्र की अवधारणा को समझने के लिए इसकी परिभाषा, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और विविध विचारों का अध्ययन आवश्यक है। राष्ट्र एक सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना है, जो समान परंपराओं, इतिहास, भाषा और सांस्कृतिक मूल्यों को साझा करने वाले लोगों के समूह से बनता है।

राष्ट्र की परिभाषा– विभिन्न विद्वानों ने राष्ट्र की परिभाषा अलग–अलग दृष्टिकोणों से की है–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

अर्नेस्ट रेनान के अनुसार, राष्ट्र एक आध्यात्मिक सिद्धांत है, जो इतिहास की सामान्य स्मृतियों और वर्तमान में एक साथ रहने की इच्छा पर आधारित होता है।

हेगल के अनुसार, राष्ट्र एक आत्म–सचेतन इकाई है, जिसमें नागरिकों की सामूहिक पहचान होती है।

बेनिडिक्ट एंडरसन ने राष्ट्र को एक कल्पित समुदाय (Imagined Community) कहा है, जो भाषा, मीडिया और सांस्कृतिक तत्वों के माध्यम से एक साझा पहचान विकसित करता है।

भारतीय संदर्भ में, महात्मा गांधी के विचारों में राष्ट्र अहिंसा और सत्य पर आधारित था, जबकि सुभाष चंद्र बोस ने राष्ट्र को आत्मनिर्भरता और सैन्य शक्ति के साथ जोड़ा।

राष्ट्र और राज्य में अंतर– राष्ट्र और राज्य दो अलग–अलग अवधारणाएँ हैं, जिन्हें अक्सर एक दूसरे के पर्यायवाची के रूप में प्रयोग किया जाता है, लेकिन उनके बीच महत्वपूर्ण अंतर हैं।

विशेषता	राष्ट्र	राज्य
परिभाषा	एक सांस्कृतिक, भाषाई और ऐतिहासिक समूह जो साझा पहचान रखता है	एक राजनीतिक इकाई जो एक निश्चित भूभाग पर शासन करती है
आधार	सांस्कृतिक, भाषाई और ऐतिहासिक कारक	कानूनी और प्रशासनिक ढांचा
सीमाएँ	भौगोलिक सीमाएँ आवश्यक नहीं	निश्चित भौगोलिक सीमाएँ
उदाहरण	भारतीय उपमहाद्वीप में विभिन्न सांस्कृतिक समूह	भारत, अमेरिका, फ्रांस आदि

राष्ट्रवाद की अवधारणा– राष्ट्रवाद वह भावना है जो किसी राष्ट्र के नागरिकों को एकता और अखंडता की ओर प्रेरित करती है। यह विभिन्न रूपों में प्रकट होता है।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद (Cultural Nationalism) – इसमें भाषा, धर्म और सांस्कृतिक परंपराएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
राजनीतिक राष्ट्रवाद (Political Nationalism)– इसमें राष्ट्र–राज्य की अवधारणा को प्राथमिकता दी जाती है।
आर्थिक राष्ट्रवाद (Economic Nationalism) – इसमें स्वदेशीकरण और आत्मनिर्भरता पर जोर दिया जाता है।
धार्मिक राष्ट्रवाद (Religious Nationalism) – इसमें धर्म को राष्ट्र की पहचान के रूप में देखा जाता है।
नागरिक राष्ट्रवाद (Civic Nationalism) – इसमें नागरिकता और संविधान आधारित राष्ट्रवाद को प्राथमिकता दी जाती है।

भारतीय संदर्भ में, राष्ट्रवाद का स्वरूप समय के साथ विकसित हुआ है। औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष के दौरान भारतीय राष्ट्रवाद ने गति पकड़ी और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान इसे व्यापक समर्थन मिला। वर्तमान समय में, राष्ट्रवाद की अवधारणा वैश्वीकरण, डिजिटल युग और राजनीतिक बदलावों के साथ और अधिक जटिल हो गई है।

भारतीय राष्ट्रवाद के प्रमुख सिद्धांत–

गांधीवादी राष्ट्रवाद – अहिंसा, सत्याग्रह और ग्राम स्वराज पर आधारित।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

नेहरूवादी राष्ट्रवाद – लोकतंत्र, समाजवाद और आधुनिकता पर केंद्रित।
सावरकर और हिंदुत्व का राष्ट्रवाद – सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान को प्रमुखता देने वाला।
सुभाष चंद्र बोस का राष्ट्रवाद – सैन्य शक्ति और प्रत्यक्ष संघर्ष पर बल देने वाला।

भारतीय राष्ट्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि– भारत की राष्ट्र अवधारणा का ऐतिहासिक विकास एक जटिल प्रक्रिया रही है, जो विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों के साथ विकसित हुई। भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को निम्नलिखित चरणों में समझा जा सकता हैं

प्राचीन भारत और राष्ट्र की अवधारणा– प्राचीन भारत में राष्ट्र की अवधारणा मुख्य रूप से सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान पर आधारित थी। वैदिक काल (1500 ई.पू. दृ 500 ई.पू.) में भारत को भारतवर्ष के रूप में जाना जाता था। महाजनपद युग (600 ई.पू. दृ 300 ई.पू.) में राजनीतिक इकाइयों का उदय हुआ, जो एक राष्ट्रवादी भावना की पूर्ववर्ती अवस्था थी। महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्य भारतीय सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने में सहायक रहे। चंद्रगुप्त मौर्य और अशोक के शासनकाल में अखंड भारत की अवधारणा को बल मिला। गुप्त साम्राज्य (319–550 ई.) को स्वर्ण युग कहा जाता है, जिसने सांस्कृतिक और बौद्धिक उन्नति को बढ़ावा दिया।

मध्यकालीन भारत और राष्ट्रवाद– मध्यकालीन भारत में राष्ट्रीय भावना कई राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं से प्रभावित रही। दिल्ली सल्तनत (1206–1526) और मुगल साम्राज्य (1526–1857) ने एक केंद्रीयकृत प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना की, जिससे भारतीय उपमहाद्वीप में एक साझा राजनीतिक इकाई का उदय हुआ। भक्ति और सूफी आंदोलन ने धार्मिक समरसता को बढ़ावा दिया और सांस्कृतिक एकता को मजबूत किया। मराठा, राजपूत और सिख राज्यों ने स्वतंत्रता और क्षेत्रीय पहचान के लिए संघर्ष किया।

औपनिवेशिक भारत और राष्ट्रवाद का उदय– ब्रिटिश शासन (1757–1947) के दौरान भारतीय राष्ट्रवाद का एक नया स्वरूप उभरा। 1857 का विद्रोह, जिसे भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम कहा जाता है, ब्रिटिश शासन के खिलाफ संगठित प्रतिरोध का पहला बड़ा प्रयास था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1885) की स्थापना ने राष्ट्रवादी आंदोलन को संस्थागत रूप दिया। महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह जैसे नेताओं ने स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी। स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन ने भारतीय राष्ट्रीय चेतना को मजबूत किया।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय राष्ट्रवाद– 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद, भारतीय राष्ट्रवाद को एक नई चुनौती का सामना करना पड़ा। भारतीय संविधान (1950) ने भारत को एक लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में स्थापित किया। पंचवर्षीय योजनाएँ और आर्थिक विकास ने राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया। 1962, 1965 और 1971 के युद्धों ने राष्ट्रीय भावना को प्रबल किया। वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण (1991) के बाद राष्ट्रवाद की नई चुनौतियाँ उभरीं। इस प्रकार, भारतीय राष्ट्रवाद का विकास प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक एक निरंतर प्रक्रिया रही है, जो सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक कारकों से प्रभावित हुई है।

भारत में सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना– भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना इसकी विविधता और बहुलतावाद का प्रतीक है। भारतीय समाज विभिन्न भाषाओं, धर्मों, जातियों और परंपराओं से मिलकर बना है, जो इसकी सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाते हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

धर्म और आध्यात्मिकता– भारत विभिन्न धर्मों का जन्मस्थल और पालन करने वाला देश है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन, यहूदी और पारसी धर्म यहाँ सह–अस्तित्व में हैं। धार्मिक विविधता भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

भाषाई विविधता– भारत में 22 आधिकारिक भाषाएँ और 1600 से अधिक स्थानीय भाषाएँ बोली जाती हैं। हिन्दी और अंग्रेजी प्रशासनिक भाषाएँ हैं, लेकिन प्रत्येक राज्य की अपनी क्षेत्रीय भाषा है।

जाति और सामाजिक संरचना– भारतीय समाज जातीय संरचना पर आधारित है, जो ऐतिहासिक रूप से वर्ण व्यवस्था से प्रभावित रही है। आधुनिक भारत में सामाजिक न्याय और आरक्षण नीतियाँ सामाजिक असमानताओं को कम करने का प्रयास कर रही हैं।

त्योहार और परंपराएँ– भारत के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराएँ और त्योहार हैं, जो इसकी सांस्कृतिक विरासत को संजोते हैं। दिवाली, होली, ईद, क्रिसमस, बैसाखी, ओणम और पोंगल जैसे त्योहार सांस्कृतिक एकता को मजबूत करते हैं। इस प्रकार, भारत की सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना इसकी राष्ट्रीय पहचान का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

संवैधानिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय राष्ट्र– भारतीय संविधान राष्ट्र की अवधारणा को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है। इसमें निम्नलिखित तत्व महत्वपूर्ण हैं।

संविधान की प्रस्तावना– भारत को एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित करती है।
मौलिक अधिकार और कर्तव्य– नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता और न्याय की गारंटी देता है।
संघीय संरचना– केंद्र और राज्य सरकारों के बीच शक्ति का विभाजन करता है।
धर्मनिरपेक्षता– सभी धर्मों को समान अधिकार प्रदान करता है।
एकल नागरिकता– सभी भारतीय नागरिकों को समान अधिकार और कर्तव्य प्रदान करता है।
भारतीय संविधान की प्रस्तावना में उल्लिखित धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र और समाजवाद जैसे तत्व भारतीय राष्ट्र की आधारशिला रखते हैं।
संघवाद और भारतीय राष्ट्र की संरचना– भारत एक संघीय संरचना वाला देश है, जहां केंद्र और राज्यों के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।
नागरिकता और राष्ट्रीय पहचान– भारतीय नागरिकता की परिभाषा और इससे जुड़ी संवैधानिक धाराओं का विश्लेषण।

वैश्वीकरण और भारतीय राष्ट्र की अवधारणा– वैश्वीकरण के प्रभाव ने भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणा को एक नई दिशा प्रदान की है। आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्तर पर वैश्वीकरण ने भारत की राष्ट्रीय पहचान को प्रभावित किया है।

वैश्वीकरण का प्रभाव

आर्थिक उदारीकरण– 1991 में आर्थिक सुधारों के बाद भारत एक वैश्विक अर्थव्यवस्था का हिस्सा बना।

सांस्कृतिक प्रभाव– पाश्चात्य संस्कृति, भाषा और जीवनशैली का भारतीय समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

राजनीतिक परिप्रेक्ष्य– अंतरराष्ट्रीय संगठनों और वैश्विक गठबंधनों में भारत की भूमिका बढ़ी।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

तकनीकी विकास– इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल क्रांति ने वैश्विक पहचान और राष्ट्रीय संस्कृति को आपस में जोड़ा।

भारतीय राष्ट्रवाद पर वैश्वीकरण का प्रभाव–

राष्ट्रीय पहचान का पुनर्परिभाषण– वैश्वीकरण के कारण पारंपरिक राष्ट्रवाद और आधुनिक वैश्विक पहचान के बीच संतुलन आवश्यक हो गया है।

तकनीक और मीडिया– डिजिटल संचार माध्यमों ने वैश्विक और राष्ट्रीय पहचान को प्रभावित किया है।

सांस्कृतिक विविधता और प्रवास– प्रवासी भारतीयों की संख्या में वृद्धि और उनकी वैश्विक भागीदारी ने भारतीय राष्ट्रवाद को एक नया दृष्टिकोण दिया।

स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत– वैश्वीकरण के साथ–साथ भारत में स्वदेशी आंदोलन और आत्मनिर्भरता की भावना भी मजबूत हुई है।

समकालीन भारत में राष्ट्रवाद– समकालीन भारत में राष्ट्रवाद का स्वरूप बहुआयामी है। यह विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होता है। वर्तमान समय में राष्ट्रवाद की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

राजनीतिक राष्ट्रवाद– भारत में विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा राष्ट्रवाद को अलग–अलग दृष्टिकोणों से परिभाषित किया जाता है।

राष्ट्रवाद को चुनावी राजनीति में एक प्रमुख मुद्दा बनाया गया है, जिसमें विभिन्न दल अपनी विचारधाराओं के अनुरूप राष्ट्रवादी नीतियों को प्रस्तुत करते हैं।

हिंदुत्व बनाम धर्मनिरपेक्षता की बहस, क्षेत्रीय दलों का उदय और राष्ट्रवादी विचारधाराओं का विकास इस संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं।

आर्थिक राष्ट्रवाद– मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत और वोकल फॉर लोकल जैसी नीतियाँ आर्थिक राष्ट्रवाद को बढ़ावा देती हैं। विदेशी निवेश और स्वदेशी उद्योगों के बीच संतुलन बनाए रखने की चुनौती बनी हुई है।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद– भारतीय संस्कृति, भाषा और परंपराओं का संरक्षण एवं प्रचार–प्रसार राष्ट्रवाद की महत्वपूर्ण धारा बनी हुई है। हिंदी, संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं को सशक्त बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। योग, आयुर्वेद और भारतीय जीवनशैली को वैश्विक मंच पर पहचान दिलाई जा रही है।

डिजिटल राष्ट्रवाद– सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने राष्ट्रवाद के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ऑनलाइन अभियानों और ट्रेंड्स के माध्यम से राष्ट्रवादी भावनाएँ जागृत की जा रही हैं। समकालीन भारत में राष्ट्रवाद निरंतर विकसित हो रहा है और बदलते सामाजिक–राजनीतिक संदर्भ में इसकी नई परिभाषाएँ उभर रही हैं।

अंततोगत्वा भारतीय राष्ट्र की अवधारणा एक निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया रही है, जो प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पहलुओं से प्रभावित होती रही है। भारत की बहुलतावादी संस्कृति, विविध भाषाएँ, परंपराएँ और धर्म, राष्ट्रवाद के विभिन्न स्वरूपों को जन्म देती हैं। आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद न केवल ऐतिहासिक अनुभवों और स्वतंत्रता संग्राम की विरासत से प्रेरित है, बल्कि वैश्वीकरण, आर्थिक प्रगति और डिजिटल क्रांति के प्रभावों से भी प्रभावित हो

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

रहा है। संवैधानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो भारतीय संविधान एक समावेशी राष्ट्रवाद को बढ़ावा देता है, जो लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और समाजवादी मूल्यों पर आधारित है।

समकालीन भारत में राष्ट्रवाद की अवधारणा राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टिकोण से बहुआयामी बन चुकी है। डिजिटल युग में राष्ट्रवाद की नई परिभाषाएँ उभर रही हैं, जिनमें सोशल मीडिया, तकनीकी नवाचार और वैश्विक परिप्रेक्ष्य की भूमिका महत्वपूर्ण होती जा रही है। अंततः, भारत में राष्ट्रवाद का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि हम अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखते हुए समावेशी और प्रगतिशील दृष्टिकोण को कैसे अपनाते हैं। राष्ट्र की अवधारणा केवल भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत और गतिशील विचारधारा है, जो समय के साथ स्वयं को पुनर्परिभाषित करती रहती है।

संदर्भ सूची–

1. बिपिन चंद्र – भारत का स्वतंत्रता संग्राम
2. रजनी कोठारी – राजनीति और राष्ट्रवाद
3. धर्मपाल – भारतीय राष्ट्रवाद का पुनरुद्धार
4. रामचंद्र गुहा – भारत, गांधी के बाद
5. हिंडोल सेनगुप्ता – राष्ट्रवाद और भारतीय लोकतंत्र
6. अशोक मित्तल – संवैधानिक राष्ट्रवाद और भारतीय परिप्रेक्ष्य
7. परीक्षित सेनगुप्ता – भारतीय समाज और राष्ट्र निर्माण
8. गोपाल कृष्ण गोखले – राष्ट्रीय चेतना और भारत
9. महादेव गोविंद रानाडे – भारतीय राष्ट्रवाद का उद्भव
10. सुभाष कश्यप – भारतीय संविधान और राष्ट्र की अवधारणा
11. दीनदयाल उपाध्याय – एकात्म मानववाद
12. अरविंद घोष – भारत और उसकी संस्कृति
13. सावरकर – हिंदुत्व
14. जवाहरलाल नेहरू – भारत की खोज
15. बलबीर पुंज – भारतीय राष्ट्रवाद की यात्रा
16. डॉ. अंबेडकर – जाति का उन्मूलन
17. अशोक मोडक – भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता
18. विनय सहस्रबुद्धे – राष्ट्रवाद के विविध आयाम
19. हर्ष मधुसूदन – भारत में राष्ट्रवाद की पुनर्रचना
20. अनिरुद्ध देशपांडे – राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया